

रमज़ान के आख़री दस दिनों की दुआएं

आख़िरी दस दिनों की दुआएं :- मालूम होना चाहिए कि रमज़ान की आख़िरी दसों शबों में यह दुआ पढ़े :-

“अभूज़ो बे जलाले वजहेकल करीमे अन यनकाज़ेया अन्नी शहरो रमाज़ाना औ यतलोअल फजरो मिन लैलाती हाज़ेही व लका केबाली ज़नबुन औ तबेआतुन तोअज़्जेबोनी अलैह”

{अर्थात् मैं पनाह मागता हूँ तेरी बुजुर्ग और मरतबे वाली ज़ात के तवस्सुत (हवाले) से इस बात से कि रमज़ान का महीना इस तरह गुज़र जाये मुझसे या यह कि ज़ाहिर हो इस रात की सहर इस हालत में कि मेरे ऊपर कोई गुनाह या ग़लती हो कि जिस पर तू मुझे सज़ा दे।}

सत्ताईसवीं शब को भी गुस्ल सुन्नत है और इमाम ज़ैन-उल-आबिदीन (अ०) इस शब में पूरी रात यह दुआ पढ़ते थे :-

“अल्लाहुम्मर जुकनित तजाफी अन दारिल गुखरे वल इनाबाता इला दारिल खुलूदे वल इस्तेअदादा लिल मौते कब्ला हुलूलिल फौत”

{अर्थात् खुदावन्दा अता कर मुझको जज़बा चेहरा फेरने का धोका देने वाली दुनिया से और लौ लगाने का आख़िरत की तरफ और मौत के लिए तैय्यार होने का इससे पहले कि (मौत का) वक़्त आ जाये।}

उन्तीसवीं तारीख और आख़िरी शब भी गुस्ल सुन्नत है और ज़ियारत-ए-इमाम हुसैन (अ०) पढ़ने का बहुत सवाब है।

इमाम जअफर सादिक (अ०) से मनकूल है कि रमज़ान के महीने की आख़िरी शब को यह दुआ पढ़े :-

“अल्लाहुम्मा ला तजअलहो आखेरल अहदे मिन सेयामी लेशहरे रमाज़ाना व अभूज़ोबेका अय्यतलआ फजरो हाज़ेहिल लैलाते इल्ला व क़द ग़फरताली”

{अर्थात् खुदावन्दा करार न दे इसको आख़िरी मौका मेरे रोज़े रखने का रमज़ान के महीने में और पनाह मोंगता हूँ मैं तुझसे इस बात से कि तुलूअ करे सुबह इस शब

रमज़ान के आख़री दस दिनों की दुआएं

की मगर यह कि मुझे तूने बख़्श दिया हो।}

इसी आख़िरी शब में सूर:-ए-अनआम, कहफ़ और यासीन पढ़ने का भी सवाब है। इसके अलावा सौ बार कहे "अस्तग़फ़ेरुल्लाहा व अतूबो इलैह"।

यह भी मालूम होना चाहिए कि रमज़ान के महीने के आख़िरी जुमअे (जुमआतुल विदाअ) में दुआ-ए-विदाअ पढ़े और वह यह है :-

"अल्लाहुम्मा ला तजअलहो आख़ेरल अहदे मिन सेयामेना इय्याहो फाइन जअलताहू फजअलनी मरहूमन वला तजअलनी महरूमा"

{अर्थात् खुदावन्दा न करार दे इस मौके को आख़िरी मौका हमारे रोज़: रखने का इस महीने में, अगर तू ने ऐसा ही फैसला कर लिया है, तो मुझ पर रहमत करार देना और अपनी रहमत से महरूम न करार देना।}

इसके अलावा आख़िरी दस शबों की अलग-अलग दुआएँ भी बतायी गयी हैं। जिनमें हर दिन की दुआ का आख़िरी टुकड़ा यह है :-

"या अल्लाहो या अल्लाहो या अल्लाह लकल अस्माउल हुसना वल अमसालुल उलया वल किब्रेयाओ वल आलाओ अस्अलोका अन तोसल्लेया अला मुहम्मविंव व आले मुहम्मद व अन तजअला इसमी फी हाज़ेहिल लैलाते फिस सोआदाए व रूही मअशशोहादाओ व एहसानी फी अिल्लीयीना व इसाआती मग़फूर: व अन तहाबा ली यकीनन तोबाशेरो बेही कल्बी व ईमानन युज़हेबुशशक्का अन्नी व तुरज़ेयानी बेमा कसमताली व आतेना फिद दुनिया हसानातवं व फिल आख़ेराते हसान: व केना अज़ाबन नारिल हरीके वर जुकनी फीहा ज़िकराका व शुकराका वर रग़बाता इलैका वल इनाबाता वत्तीबाता वत्तीफीका लेमा वफ़फ़क़तालहू मुहम्मदवं व आला मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व अलैहिम अजमअीन"

{अर्थात् ए खुदा ए खुदा ए खुदा तेरे ही लिए अच्छे-अच्छे नाम और बुलन्द व बाला मिसालें और बरतारी और बख़िशिशें लाएक व सज़ावार हैं, मैं तुझसे सवाल करता हूँ कि तू मुहम्मद व आल-ए-मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम पर रहमत नाज़िल फर्मा और इसी शब मेरा नाम नेकी करने वालों में दर्ज फर्मा और मेरी रूह को शहीदों के साथ करार दे और मेरे अच्छे अमल को ऊँचे मुकाम (जगह) पर पहुँचाँ और मेरे बुरे कामों की मग़फ़रत (माफी) हो जाये और यह कि तू मुझे ऐसा ठोस यकीन अता फर्मा जो मेरे कल्ब (दिल) से मिल जाये और ऐसा मज़बूत ईमान जो मुझसे शक को दूर कर दे और मुझे उस हिस्से पर राज़ी कर दे जो तूने मेरे लिए तय किया है और हम को दुनिया और आख़िरत में ख़ैर व ख़ूबी अता फर्मा और हमें जहन्नम की आग के दर्दनाक अज़ाब से बचा और मुझे इस शब में

www.IslamInHindi.org

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए

संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रमज़ान के आख़री दस दिनों की दुआएं

अपना ज़िक्र अपना शुक्र और अपनी तरफ रग़बत और क़ल्ब का लगाव और तौब: और उन तमाम अमल की तौफीक अता फर्मा जिन के अदा करने की तौफीक मुहम्मद (स॰) व आल-ए-मुहम्मद (अ॰) को अता फर्मायी। अल्लाह की रहमत हो रसूल-ए-खुदा (स॰) और उनके तमाम अहल-ए-बैत-ए-ताहेरीन (अ॰) पर।}

उपर्युक्त दुआ के आख़री टुकड़े के साथ आख़री दस शबों की अलग-अलग दुआ यह है।

इक्कीसवीं शब :- “या मूलेजल लैले फिन्नहारे व मूलेजन नहारे फिल लैले व मुखरेजल हय्ये मेनल मय्यिते व मुखरेजल मय्यिते मेनल हय्ये या राज़ेका मय्यशाओ बेग़ैरे हिसाब या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या रहीम” इसके बाद ऊपर लिखा आख़री टुकड़ा पढ़ें।

{अर्थात् ए रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करने वाले और ए ज़िन्द: को मुर्द: से और मुर्द: को ज़िन्द: से निकालने वाले ए जिसे चाहे बे हिसाब रोज़ी देने वाले ए खुदा ए महरबान ए अल्लाह ए सबसे ज़्यादा: रहम करने वाले।}

बाईसवीं शब :- “या सालेख़न्नहारे मेनल लैले फाइज़ा नहनो मुज़लेमून व मुज़रे यशशमसे ले मुस्तकरैलहा बे तकदीरेका या अज़ीज़ो या अलीमो या मो क़दवेरल क़मारे मनाज़ेला हत्ता आदा कल अुरज़ूनिल क़दीमे या नूरा कुल्ले नूरिन व मुनतहा कुल्ले रग़बातिन व वलीया कुल्ले नेअमातिन या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या कुददूसो या अहादो या वाहेदो या फ़दो” इसके बाद ऊपर लिखा आख़री टुकड़ा पढ़ें।

{अर्थात् ए दिन को रात से ख़ैच कर अलग करने वाले जिससे हम पर तारीकी (अंधेरे) का ग़लब: हो जाता है और जारी करने वाले आफ़ताब (सूरज) के उसके करार की जगह में अपनी करार दाद के साथ ए इज़्ज़त वाले ए बाख़बर और ए चाँद के लिए मंज़िलों को तय करने वाले यहाँ तक कि वह फिर ज़ाहिर हो। कज़ी (टेढ़ेपन) के साथ पुरानी शाख की तरह से ए हर रौशनी के रौशन करने वाले और हर क़स्द (इरादे) के आख़री मक़सद और मालिक हर नेअमत के ए अल्लाह ए बड़े रहम वाले ए अल्लाह ए बुराईयों से पाक ए यक़ता ए एक ए अकेले।}

तेईसवीं शब :- “या रब्बा लैलातिल क़द्रे व जाअेलाहा ख़ैरन मिन अलफ़े शहर व रब्बल लैले वन्नहार वलजेबाले वल बेहार वज़्जुल्मे वल अनवार वल अर्जे वस्समाअ या बारैओ या मुसव्वेरो या हन्नानो या मन्नानो या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या क़य्यूमो या अल्लाहो या बदीओ” (आख़री टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए शब-ए-क़द्र के मालिक और ए इस रात को हज़ार महीनों से बेहतर

www.IslamInHindi.org

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए

संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रमज़ान के आख़री दस दिनों की दुआएं

करार देने वाले ए रात और दिन और पहाड़ों और दरयाओं और अंधेरो और रौशनीयों और ज़मीन व आसमान के मालिक ए पैदा करने वाले ए सूरत बनाने वाले ए महरबानी करने वाले ए एहसान करने वाले ए अल्लाह ए अल्लाह ए बड़े रहीम ए अल्लाह ए बाकी रहने वाले ए अल्लाह ए अनोखी ईजाद करने वाले।)

चौबीसवीं शब :- “या फ़ालेकल इसबाहे व जाअेलल लैले सकाना वश शमसे वल कमारे हुस्बाना या अज़ीज़ो या अलीमो या ज़ल मन्ने वत तीले वल कुव्वते वल हीले वल फज़ले वल इनआमे या ज़ल जलाले वल इकराम या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या फर्दो या वितरो या अल्लाहो या ज़ाहेरो या बातेनो या हय्यो ला इलाहा इल्ला अन्ता”

(फिर आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

(अर्थात् ए सुबह की पौ फाड़ने वाले और करार देने वाले रात को आराम व सुकून का वक़्त और सूरज और चोंद को हिसाब के साथ जारी करने वाले ए इज़्ज़त वाले ए बाख़बर ए एहसान और बख़्शिश और कुव्वत और ताक़त और नेअमत और अता के मालिक ए जलालत और बुजुर्गी रखने वाले ए अल्लाह ए बड़े रहम वाले ए अल्लाह ए अकेले ए बे मिस्ल व बेनज़ीर ए अल्लाह ए ज़ाहिर ए बातिन ए ज़िन्द: नहीं है कोई मअबूद सिवाये तेरे।)

पच्चीसवीं शब :- “या जाअेलल लैले लिबासा वन्नहारे मआशा वलअर्ज़े मेहादा वल जेबाले औतादा या अल्लाहो या काहेरो या अल्लाहो या जब्बारो या अल्लाहो या समीओ या अल्लाहो या करीबो या अल्लाहो या मोजीबो” (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए रात को पर्द: पोश करार देने वाले और दिन को रोज़ी की तलाश का मौका और ज़मीन को बिछौना और पहाड़ों को मेख़ों (खूंटों) की तरह ए अल्लाह ए ज़बरदस्त ए अल्लाह ए ताक़त वाले ए अल्लाह ए सुनने वाले ए अल्लाह ए करीब ए दुआओं के कुबूल करने वाले)

छब्बीसवीं शब :- “या जाअेलल लैले वन्नहारे आयातैन या मनमहा आयातल लैल व जआला आयातन नहारे मुबसेर: लेतबतगू फज़लन मिनहो व रिज़वाना या मुफस्सेला कुल्ले शैइन तफसीला या अल्लाहो या माजेदो या वहहाबो या अल्लाहो या जवादो” (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए दिन और रात को दो निशानीयों करार देने वाले ए वह जिसने मिटाया रात की निशानी को और दिन की निशानी को रौशन करार दिया ताकि लोग इससे फ़ायेदे और मर्ज़ी के मुताबिक मतलब हासिल करें ए अलग-अलग करार देने वाले हर

www.IslamInHindi.org

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए

संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रमज़ान के आख़री दस दिनों की दुआएं

चीज़ को पूरे तौर पर ए अल्लाह ए साहिब-ए-बुजुर्गी ए अता करने वाले ए अल्लाह ए सख़ी)

सत्ताईसवीं शब :- “या माद दज़ ज़िल्ले वलौ शेएता जअलताहू साकेना व जअल तश शमसा अलैहे दलीला सुम्मा कबज़ताहू इलैका कबज़य यसीरा या ज़ल हीले वत्तौल वल किवरियाए वल आलाए लाइलाहा इल्ला अन्ता आलेमुल ग़ैबे वश शहादातिर रहमानुर रहीम ला इलाहा इल्ला अन्ता या कुददूसो या सलामो या मोमेनो या मुहैमेनो या अज़ीज़ो या जब्बारो या मुता कब्बेरो या अल्लाहो या ख़ालेको या बारेओ या मुसव्वेरो” (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें।)

{अर्थात् ए हर चीज़ के साये को फैलाने वाले और अगर तू चाहता तो उसे बाकी रखता और सूरज को तूने साया फैलने का ज़रिया बनाया फिर धीरे-धीरे उसको सुकेड़ दिया ए कुव्वत और ताकत और बुजुर्गी और नेअमतों वाले कोई भी तेरे सिवा मअबूद नहीं है तू ही हाज़िर और ग़ायब का जानने वाला है बड़ा रहम वाला और फायदः पहुँचाने वाला है तेरे सिवा कोई खुदा नहीं ए पाक ए सलामती अता करने वाले ए अम्न व इत्मिनान देने वाले ए हिफाज़त करने वाले ए अिज़्ज़त वाले ए ताकत वाले ए बुजुर्गी वाले ए अल्लाह ए ख़ालिक ए पैदा करने वाले ए सूरत बनाने वाले।}

अठठाईसवीं शब :- “या ख़ाज़ेनल लैले फिल हवाए या ख़ाज़ेनन नूरे फिस्समाअए व माने अस्समाअए अन तकाआ अलल अर्जे इल्ला बे इज़नेही व हाबेसाहुमा अन तजूला या अलीमो या अज़ीमो या ग़फ़ूरो या दाएेमो या अल्लाहो या वारेसो या बाअेस मन फिल कुबूर” (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए रखवाली करने वाले रात के अंधेरे में और ए जमा करने वाले आसमान में नूर के और ए रोकथाम करने वाले आसमान की ज़मीन पर गिर पड़ने से लेकिन तू ही चाहे और रोकने वाले उन दोनों (ज़मीन और आसमान) के इस बात से कि वह हट जायें (टकरा न जायें) अपनी जगह से ए जानने वाले ए बुजुर्ग ए बख़्शाने वाले ए हमेशा रहने वाले ए अल्लाह ए पूरी दुनिया के बाद बाकी और ए लोगों को क़ब्रों से उठाने वाले।}

उन्तीसवीं शब :- “या मुकव्वेरल लैले अलन नहार व मुकव्वेरन नहारे अलल लैल या अलीमो या हकीमो या रब्बल अरबाब व सय्येदस सादात ला इलाहा इल्ला अन्ता या मन होवा अक्राबो इलैहे मिन हब्लिल वरीद” (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए रात को दिन पर लपेटने वाले और दिन को रात पर लपेटने वाले ए जानने वाले ए मसलहत के मुताबिक़ काम करने वाले ए मालिकों के मालिक ए सरदारों

www.IslamInHindi.org

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए

संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रमज़ान के आख़री दस दिनों की दुआएं

के सरदार तेरे सिवा कोई मअबूद (खुदा) बरहक नहीं है ए वह जो मुझसे रग-ए-गर्दन से ज़्यादा करीब है।}

तीसवीं शब :- “अल्हम्दो लिल्लाहे ला शरीका लहू अल्हम्दो लिल्लाहे कमा यनबगी लेकरामा वज्हेही व अिज़्जे जलालेह व कमा हुवा अहलोह या कुददूसो या नूरो या नूरल कुदसे या सुब्बूहो या मुन्ताहत तसबीह या रहमानो या फाअेलर रहमः या अल्लाहो या अल्लाहो या अलीमो या कबीरो या अल्लाहो या लतीफो या जलीलो या अल्लाहो या अल्लाहो या समीओ या बसीरो” (ऊपर लिखा आख़री टुकड़ा पढ़ें।)

{अर्थात् तअरीफ अल्लाह के लिए है उसके लिए शरीक नहीं तअरीफ अल्लाह के लिए जैसा कि मुनासिब (सज़ावार) है उसके सिफात (खूबीयों) की बुजुर्गी और उसके जलाल की अिज़्ज़त के लिए और जिसका वह हकदार (मुसतहक) है ए पाक व पाकीज़ा हस्ती ए नूर ए आलम-ए-कुदस के रौशन करने वाले ए अैबों और कमीयों से पाक ज़ात वाले ए तसबीह के आख़री मरकज़ ए बड़े रहम वाले ए रहम के पैदा करने वाले ए अल्लाह ए जानने वाले ए बुजुर्ग ए अल्लाह ए लुत्फ (व करम) करने वाले ए बुजुर्ग मर्तबः ए अल्लाह ए अल्लाह ए सुनने वाले ए देखने वाले।}

www.IslamInHindi.org

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए

संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990